MAED-18

वर्धमान महावीर खुला विश्वविद्यालय, कोटा

लघु शोध की रूपरेखा

OUTLINE FOR DISSERTATION

MAED-18

वर्धमान महावीर खुला विश्वविद्यालय, कोटा

एम. ए. शिक्षा में लघु शोध की रूपरेखा
OUTLINE FOR M.A. EDUCATION DISSERTATION

शिक्षा–विभाग

वर्धमान महावीर खुला विश्वविद्यालय, कोटा

Vardhman Mahaveer Open University, Kota

रावतभाटा रोड़, कोटा

RAWATBHATA ROAD, KOTA

पाठ्यक्रम अभिकल्प समिति

अध्यक्ष

प्रो. (डॉ.) नरेश दाधीच

कुलपति

वर्धमान महावीर खुला विश्वविद्यालय, कोटा (राजस्थान)

संयोजक / सदस्य

संयोजक

डॉ. दामीना चौधरी

सहआचार्य, शिक्षा

वर्धमान महावीर खुला विश्वविद्यालय, कोटा (राजस्थान)

सदस्य

1. **प्रो. सोहन वीर सिंह चौधरी**
   इन्दिरा गांधी राष्ट्रीय मुक्त विश्वविद्यालय
   नई दिल्ली

2. **डॉ. अनिल शुक्ला**
   लखनऊ विश्वविद्यालय
   लखनऊ (उ.प्र.)

3. **प्रो. मंजूलिका श्रीवास्तव**
   दूरस्थ शिक्षा परिषद
   इन्दिरा गांधी राष्ट्रीय मुक्त विश्वविद्यालय
   नई दिल्ली

4. **प्रो. डी.आर. गोयल**
   एम.एस. विश्वविद्यालय
   बड़ौदा, गुजरात

5. **प्रो. एस.पी. मल्होत्रा**
   कुरुक्षेत्र विश्वविद्यालय, कुरुक्षेत्र

अकादमिक एवं प्रशासनिक व्यवस्था

प्रो. नरेश दाधीच	**प्रो. अनाम जैतली**	**प्रो. पी.के. शर्मा**
कुलपति	निदेशक	निदेशक
वर्धमान महावीर खुला विश्वविद्यालय, कोटा	**संकाय विभाग**	**पाठ्य सामग्री उत्पादन एवं वितरण विभाग**

पाठ्यक्रम उत्पादन

योगेन्द्र गोयल

सहायक उत्पादन अधिकारी,

वर्धमान महावीर खुला विश्वविद्यालय, कोटा

उत्पादन : अगस्त 2010 ISBN-13/978-81-8496-238-3

इस सामग्री के किसी भी अंश को व. म. खु. वि., कोटा की लिखित अनुमति के बिना किसी भी रूप मे 'मिमियोग्राफी' (चक्रमुद्रण) द्वारा या अन्यत्र पुनः प्रस्तुत करने की अनुमति नहीं है।

व. म. खु. वि., कोटा के लिये कुलसचिव व. म. खु. वि., कोटा (राज.) द्वारा मुद्रित एवं प्रकाशित।

एम. ए. शिक्षा पाठ्यक्रम में लघु शोध की रूप रेखा
OUTLINE FOR M.A. EDUCATION DISSERTATION

प्रस्तावना (Introduction)

आपको एम.ए. शिक्षा पाठ्यक्रम के शिक्षार्थी के नाते एक प्रश्नपत्र के रूप में लघु शोध का अध्ययन करना है। आप यह जानने के इच्छुक होंगे की लघु शोध पाठ्यक्रम क्या है? इसका अध्ययन कैसे करना होगा? इसके मानदण्ड क्या हैं ? आदि। शैक्षिक दृष्टि से आपको लघु शोध संबंधित कुछ बिन्दुओं की जानकारी होना आवश्यक है। इन बिन्दुओं को निम्न तीन भागों में विभाजित किया जा सकता है-

(1) लघु शोध के लिए समस्या का निर्धारण एवं शोध प्रस्ताव / योजना का निर्माण
(2) शोध क्रियान्विति की विधि
(3) प्रतिवेदन लिखना

जैसा कि आप जानते हैं कि लघु शोध मौलिक शोध का ही रूप है, जिसमें शैक्षिक शोध के विभिन्न चरणों व विधियों को सुव्यवस्थित तरीके से काम में लिया जाता है। इसके पाठ्यक्रम में शोध की विधियों के सैद्धान्तिक पक्ष तथा संख्यात्मक विश्लेषण का विस्तारपूर्वक वर्णन किया गया है। लघु शोध, शोध प्रबंध का ही क्रियात्मक पक्ष है। लघु शोध के द्वारा आप शोध सम्पादन का ज्ञान व कौशल विकसित कर सकेंगे तथा आपके अध्ययन में दूसरों के द्वारा किये गये शोधों के मूल्यांकन के लिए विश्लेषणात्मक चिन्तन कर सकेंगे। शोध प्रबंध संबंधी पाठ्य सामग्री तथा पुस्तकें आपको लघु शोध में पर्याप्त सहयोग करेंगी। साथ ही आपको शोध कार्य को सुचारू रूप से सम्पन्न करने के लिए भी एम० ए० लघु शोध के बारे में स्पष्ट ज्ञान होना चाहिए। आप नियमित रूप से अध्ययन केन्द्र पर अपने मार्गदर्शक (Guide) से परामर्श प्राप्त करते रहें।

आप लोगों को एम० ए० (शिक्षा) लघु शोध में सहयोग / मार्गदर्शन हेतु यह आलेख तैयार किया गया है। इस आलेख में उपर्युक्त तीनों मुख्य भागों के प्रमुख बिन्दुओं पर प्रकाश डाला गया हे।

प्रथम भाग - समस्या का चयन (Selection of the Problem)

इस भाग में लघु शोध संबंधी विभिन्न समस्याओं पर प्रकाश डाला गया है।

लघु शोध हेतु समस्या के चयन के लिए निम्न क्षेत्रों पर विचार किया गया है-

(1) शैक्षिक घटना की व्याख्या एवं उसके स्तर को समझना।
(2) विभिन्न चरों के मध्य में 'कार्य - कारण प्रभाव' के संबंधों के संदर्भों में किसी घटना की व्याख्या।
(3) समस्या का समाधान - किसी समस्या के समाधान में विभिन्न तकनीकों की प्रभावशीलता का मूल्यांकन।

इन समस्याओं को शिक्षा के विभिन्न क्षेत्रों के संदर्भ में पहचाना जा सकता है।

(1) शिक्षा का वर्णन
(2) शिक्षा का इतिहास
(3) शिक्षा का समाज विज्ञान
(4) शिक्षा का अर्थशास्त्र
(5) शिक्षा का मनोविज्ञान
(6) परख एवं मापन
(7) पाठ्यक्रम विकास एवं पाठ्यक्रम मूल्यांकन
(8) शैक्षिक प्रौद्योगिकी
(9) शैक्षिक प्रशासन
(10) शैक्षिक शिक्षा
(11) दूरस्थ शिक्षा
(12) उपलब्धियों का सहसंबंध **(Correlates)**
(13) शैक्षिक मार्गदर्शन एवं परामर्श
(14) प्रारम्भिक शिक्षा, इत्यादि
(15) शिक्षा में प्रयुक्त की जाने वाली आधुनिक तकनीक व उसका प्रभाव

प्रोफेसर बुच के द्वारा सम्पादित एवं राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान एवं प्रशिक्षण परिषद् **(NCERT)** द्वारा प्रकाशित "अनुसंधानों का सर्वेक्षण" **(Survey of Research)** एवं अन्य अनुसंधान से संबंधित पत्र-पत्रिकाओं के माध्यम से आपको और भी अनुसंधानों की जानकारी मिल सकती है। अध्ययन के प्रमुख क्षेत्रों की पहचान आपको अपने लघु शोध के लिए विशिष्ट समस्या /शीर्षक चुनने में मददगार साबित होगी।

विभिन्न क्षेत्रों से संबंधित समस्याएँ /शीर्षक निम्नानुसार हैं। आप शैक्षिक अनुसंधान के विभिन्न क्षेत्रों के संदर्भ में कई अन्य समस्याएँ भी तलाश कर सकते हैं।

क्रम स0	**क्षेत्र**	**समस्या / शीर्षक**
1.	शिक्षा दर्शन (Educational Philosophy)	1. स्वामी विवेकानन्द के शैक्षिक विचार 2. श्री अरविन्द का समन्वित शिक्षा दर्शन 3. भगवद् गीता में शिक्षा दर्शन 4. जे. कृष्ण मूर्ति का शिक्षा दर्शन एवं अन्य दर्शनों का तुलनात्मक अध्ययन
2.	शिक्षा का समाज विकास (Educational and Social Development)	1. शहरी शिक्षित युवा का आधुनिकीकरण 2. जनजातीय विद्यालयी छात्रों के माता-पिता का व्यवहार एवं परिवार की संरचना 3. जनजातीय समाज की सामाजिक, सांस्कृतिक एवं शैक्षिक पृष्ठभूमि

		4. आश्रम विद्यालय में शिक्षा ग्रहण करना 5. राजस्थान के गांव में शैक्षिक स्थितियाँ
3.	शिक्षा का इतिहास (History of Education)	1. राज्य में शैक्षिक अनुसंधान परिषद् के इतिहास व विकास का अध्ययन 2. जिले में स्वतंत्रता के बाद माध्यमिक शिक्षा की प्रगति व समस्याओं का अध्ययन 3. ब्रिटिश काल के शाही राज्य में राजस्थान में माध्यमिक शिक्षा 4. वैदिक काल में शैक्षिक संस्थाओं का अध्ययन
4.	शिक्षा का अर्थशास्त्र (Economics of Education)	1. उच्चतर माध्यमिक विद्यालयों की गैर सरकारी व्यवस्था में लागत का विश्लेषण 2. सैकण्डरी स्तर पर गैर सरकारी प्रबंधकीय विद्यालयों पर शैक्षिक व्यय 3. राजस्थान के जिलों में माध्यमिक शिक्षा की इकाईयों पर होने वाले खर्च का अध्ययन 4. शहर के महाविद्यालयों में बी०ए० एवं बी०काम० के विद्यार्थियों की इकाई का तुलनात्मक अध्ययन
5.	शिक्षा का मनोविज्ञान (Educational Psychology)	1. चातुर्य, सामाजिक एवं आर्थिक स्तर एवं शैक्षिक उपलब्धि का सृजनशीलता पर प्रभाव 2. जिले के कक्षा आठवीं के छात्रों की विद्यालय में समायोजन की समस्या का अध्ययन 3. सैकेण्डरी स्तर पर जनजाति एवं गैर जनजाति के विद्यार्थियों के व्यक्तित्व के गुणों का अध्ययन 4. ग्रामीण एवं शहरी विद्यालयों के कक्षा नवीं के छात्रों में मानवीय मूल्यों (ईमानदारी एवं सहानुभूति) का तुलनात्मक अध्ययन। 5. प्राथमिक विद्यालय स्तर के (कक्षा 5 व 6) छात्रों के सामाजिक आर्थिक स्तर एवं चातुर्य के संदर्भ में आदतों का अध्ययन।
6.	परख एव मापन (Evalucation and easurement)	1. कक्षा 5 का गणित की न्यूनतम अधिगम स्तर आधारित परख का निर्माण 2. माध्यमिक स्तर पर सामान्य विज्ञान का प्रश्न बैंक तैयार करना

		3. कक्षा 5 के स्तर पर पर्यावरण शिक्षा विषय हेतु उपलब्धि परख बनाना व मानकित (Standardise) करना 3. कक्षा 8 के बालकों की गणित विषय की कमजोरियाँ ज्ञात करने के लिए जाँच का निर्माण एवं मानकित(Standardise) करना 4. निबन्धात्मक जाँच एवं वस्तुनिष्ठ प्रकार की जाँच की तुलनात्मकता एवं विश्वसनीयता ज्ञात करना
7.	पाठ्यक्रम निर्माण एवं मूल्यांकन (Curricalum Developmen and Evaluation)	1. 'लोक जुम्बिश' तथा 'संधान' के द्वारा निर्मित कक्षा4 की पर्यावरण अध्ययन की पाठ्य पुस्तक का मूल्याँकन 2. माध्यमिक स्तर पर सामाजिक अध्ययन के केन्द्रीय पाठ्यक्रम के बारे में अध्यापकों की प्रतिक्रियाएँ 3. डाइट द्वारा आयोजित सेवा प्रशिक्षण कार्यक्रमों का अध्ययन 4. पहली कक्षा पर भाषा के पाठ्यक्रम का निर्माण 5. स्वयं सेवी संस्थाओं द्वारा किसी गाँव / तालुका / ग्रामीण क्षेत्र में किये गये साक्षरता कार्यक्रम के मूल्यांकन का अध्ययन / विश्लेषण
8.	शैक्षिक प्रौद्योगिकी (Educational Technology)	1. सीधे तथा अन्त: क्रियात्मक माध्यम द्वारा प्राथमिक स्तर के लिए प्रदर्शित शैक्षिक दूरदर्शन के कार्यक्रमों की प्रभावशीलता 2. कक्षा 7 के छात्रों के लिए पर्यावरण जागरूकता पर बहु माध्यम आधारित पैकेज का निर्माण 3. कक्षा 10 के लिए गणित विषय पर कम्प्यूटर समर्थित अनुदेशन की प्रभावशीलता 4. सैकेण्डरी स्तर पर सामाजिक मूल्यों के विकास पर मूल्य / विचार-विमर्श मॉडल की प्रभावशीलता 5. कक्षा 8 के स्तर पर सामाजिक विज्ञान विषय पर स्वनिर्देशित सामग्री का निर्माण एवं वैधता निर्धारण 6. सैकेण्डरी स्तर के छात्रों की शैक्षिक दूरदर्शन कार्यक्रमों के प्रति अभिवृत्ति

9.	शैक्षिक प्रशासन (Educational Administration)	1. प्राथमिक विद्यालयों के शिक्षकों की उनके शिक्षण व्यवसाय के संदर्भ में कार्य-संतुष्टि (Job Satisfaction) 2. सैकेण्डरी स्कूल के प्रधानाचार्यो को शैक्षिक प्रबन्धन से संबंधित प्रशिक्षण आवश्यकताओं की पहचान 3. कक्षीय वातावरण तथा इसका विद्यार्थी शैक्षिक उपलब्धि से संबंध 4. अंग्रेजी माध्यम वाले विद्यालयों में व्यवस्था संबंधी वातावरण एवं अध्यापक का नैतिक स्तर (Moral) 5. राजस्थान के प्राथमिक विद्यालयों में दिन का भोजन कार्यक्रम की क्रियान्विति
10.	शिक्षक शिक्षा (Teacher Education)	1. डाइट में होने वाले सेवारत कार्यक्रमों के प्रति शिक्षकों की प्रतिक्रियाएँ 2. सैकेण्डरी विद्यालयों में बी० एड0 के प्रशिक्षणार्थियों के अभ्यास शिक्षण (Practice Teaching) की समस्याएँ 3. विद्यालयी शिक्षकों के सघन अभिनवन का प्रभाव 4. बनावटी एवं वास्तविक स्थिति आधारितशिक्षक प्रशिक्षण का तुलनात्मक अध्ययन 5. डाइट्स में महिला प्रशिक्षणार्थियों द्वारा अनुभव की जाने वाली समस्याएँ 6. शिक्षक की शिक्षा में स्वामी विवेकानन्द के दर्शन की क्रियान्विति
11.	दूरस्थ शिक्षा (Distance Education)	1. खुला विश्वविद्यालय प्रणाली द्वारा चलाये जा रहे शिक्षक प्रशिक्षण कार्यक्रमों के प्रति सेवारत शिक्षकों की प्रतिक्रियाएँ 2. सेवारत शिक्षकों को दूरस्थ शिक्षा के माध्यम से शिक्षा देने हेतु प्रशिक्षणों में आने वाली समस्याओं का आंकलन 3. दूरस्थ शिक्षा के विद्यार्थियों के व्यक्तित्व के गुणों का अध्ययन 4. छात्रों की दृष्टि में इंदिरा गांधी मुक्त वि0 वि0 के टेली कॉन्फ्रेंसिंग कार्यक्रम की प्रभावशीलता

	5. मुक्त वि0वि0 की विद्यार्थी सहायता सेवाओं का अध्ययन
12. उपलब्धि के परस्पर संबंधित घटक (Inter Related Factors Of Achievement)	1. प्राथमिक विद्यालयों के बालकों के उनके सामाजिक आर्थिक स्तर के संदर्भ में उपलब्धि का अध्ययन 2. प्राथमिक स्तर (कक्षा 5) के बालकों की विभिन्न चरों (जाति, माता-पिता की शिक्षा आदि) के संदर्भ में उपलब्धि का तुलनात्मक अध्ययन 3. सैकेण्डरी स्तर पर निम्न बौद्धिक स्तर तथा उच्च बौद्धिक स्तर के छात्रों की अध्ययन आदतों का अध्ययन 4. शैक्षिक उत्प्रेरणा, उपलब्धि की आवश्यकता तथा शैक्षिक उपलब्धि का अध्ययन 5. छात्रों में पढने की क्षमता व सामान्य बौद्धिक क्षमता के संबंध में उपलब्धि का अध्ययन
13. शैक्षिक निर्देशन एवं परामर्श (Educational Guidance का अध्ययन and Counselling)	1. माध्यमिक स्तर के छात्रों की व्यावसायिक रूचि 2. विद्यालय के निर्देशन एवं परामर्श कार्यक्रम के प्रति छात्रों की प्रतिक्रियाएँ 3. विद्यालय के परामर्शदाताओं की प्रशिक्षण आवश्यकताएँ 4. व्यावसायिक शिक्षा के प्रति छात्रों की अभिवृति का मापन 5. प्राथमिक विद्यालयों में न्यूनतम अधिगम स्तर (MLL) के संदर्भ में मन्द गति से सीखने वाले शिक्षार्थियों के विश्लेषण के लिए उपकरण का निर्माण करना
14. प्रारम्भिक शिक्षा (Elementary Education)	1. लोक शाला कार्यक्रम की केस स्टेडी (Case Study) 2. प्राथमिक स्तर पर विद्यालय छोड़ने वाले बालकों की समस्याओं का अध्ययन 3. आनन्ददायी शिक्षण की प्रविधियों का निर्माण तथा उसकी प्रभावशीलता का अध्ययन 4. प्रारम्भिक शिक्षण के प्रबन्धन में समाज की

भागीदारी

5. ग्रामीण क्षेत्रों में बालिकाओं की शिक्षा के प्रति अभिभावकों का दृष्टिकोण

लघु शोध के लिए समस्या का चयन कैसे करें ?
(How should you select a topic for the Dissertation)

अधिस्नातक स्तर के छात्र / छात्राएँ अक्सर अपने मार्ग दर्शक से शोध के शीर्षक के लिए पूछते रहते हैं तथा दूसरी ओर छात्र पहली बार दिमाग में उपजे अकेले शोध विचार से चिपके रहते हैं। दोनों ही प्रकारों को प्रोत्साहित नही किया जाना चाहिए। आपकी कल्पना और सूझ को महत्त्व दिया जाना चाहिए। यह उपलब्ध साहित्य के ध्यानपूर्वक अध्ययन पर आधारित होना चाहिए। आपके अनुसंधान के लिए समस्या के चयन में खुलापन होना चाहिए।

सर्वप्रथम शोधार्थी को उपलब्ध शोध साहित्य का भली-भांती अध्ययन करना चाहिए। कुछ विचार आपके मस्तिष्क में पूर्व से ही निहित हो सकते हैं। साहित्य अध्ययन के माध्यम से उसमें कुछ संशोधन हो सकता है। कुछ पूर्व निर्धारित धारणाएँ / विचार अध्ययन के परिणाम स्वरूप समाप्त भी हो सकते हैं। साहित्य के अधिकाधिक अध्ययन के फलस्वरूप आपको अपने विचारों को पुर्नसंगठित करने में सहायता मिलेगी तथा आप अपने कार्य द्वारा नवीन समस्याओं का समाधान कर सकेंगे। साहित्य के अध्ययन अर्थात् जर्नल्स, लघु शोध प्रतिवेदन, शोध निष्कर्ष के अध्ययन से आपकी अपनी समस्या तथा उसी प्रकार की समस्याएँ, जिन में पूर्व में कार्य हो चुका है, के बारे में समझ विकसित हो सकेगी तथा आप अपने आप को लघु शोध करने के काबिल बना सकेंगे। पूर्व के शोध कार्यो से आपको अपनी समस्या से संबंधित तथ्य तथा सूचनाएँ एकत्रित करने में सहयोग मिलेगा।

दूसरे स्थान पर आपकी शैक्षिक अनुसंधानों में रूचि आपके समस्या चयन को प्रभावित कर सकती है। इससे आपको समस्या पर स्वतंत्र रूप से कार्य करने में सहयोग मिलेगा। आपको अपने शोध हेतु विवादास्पद विषय नहीं चुनना चाहिए। आप जितनी गहराई से अपनी शोध समस्या का चयन एव परिभाषित करेगें, उतना ही आपका लघु शोध महत्त्वपूर्ण होगा।

आपको इस बात का पता लगाना चाहिए की आपका लघुशोध कितना मौलिक होगा? आपको उन विचारों तथा तरीकों को महत्त्व देना चाहिए जो परम्परागत तरीकों से हट कर हों। विशेष तौर से शैक्षिक प्रौद्योगिकी के संदर्भ में पठन - पाठन प्रणाली की जटिल समस्याओं को हल करने के वैकल्पिक तथा आधुनिकतम तरीके ढूंढ़ने होंगे। आपको शिक्षा में नये विचारों तथा प्रयोगों के लिए अपना मस्तिष्क हमेशा खुला रखना होगा।

समस्या की चयन प्रक्रिया (The process of selection of the problem)

1 सर्वप्रथम आपको अपनी रूचि तथा अनुभव का विस्तृत क्षेत्र ढूँढना होगा। आप जो कुछ करने की सोच रहे हैं. उसकी विस्तृत रूप रेखा तैयार करें। कभी - कभी इस स्तर पर समस्या ज्यादा स्पष्ट नहीं होती है।

2 आपको शोध से संबंधित उपलब्ध समस्त साहित्य का अध्ययन करना चाहिए। उदाहरण के तौर पर यदि आप प्रभावी पठन - पाठन विधियाँ तथा माध्यमों में रूचि रखते है तो आपको शैक्षिक प्रौद्योगिकी से संबंधित समस्त साहित्य का अध्ययन करना चाहिए। यदि आप बालकों के व्यवहार एवं व्यक्तित्व में रूचि रखते हैं, तो आपको शिक्षा - मनोविज्ञान एवं व्यक्तित्व से संबंधित साहित्य का अध्ययन करना होगा। जैसा कि ऊपर कहा जा चुका है, आपको विभिन्न शैक्षिक पत्रिकाएँ, एन०सी0ई0आर0टी0, नई दिल्ली द्वारा प्रकाशित शैक्षिक अनुसंधानों का सर्वेक्षण, शिक्षक प्रशिक्षण संस्थानों तथा विश्वविद्यालयों में सम्पादित डाक्ट्रेट स्तर के शोध तथा लघु शोध आदि का अध्ययन करना चाहिए।

3 यदि आप सैद्धांतिक कार्यो में रूचि रखते हैं, तो आपको आपकी समस्या से संबंधित वर्तमान सिद्धांतों का अध्ययन करना चाहिए। जिस परिकल्पना का निर्माण आप करना चाहते हैं, वह सिद्धांत से उत्पन्न होना चाहिए। संबंधित साहित्य का अध्ययन आपको इस कार्य में सहायता करेगा। निर्देशित परिकल्पना बनाने के लिए ठोस आधार की आवश्यकता है।

4 आप सोचते होगें कि आपका कार्य किस प्रकार आदर्श प्रकृति का बन सकता है ? दूसरे शब्दों में आप किस प्रकार नई परिकल्पना की जाँच करेंगे। फिर भी आपके दिमाग में पूर्व अध्ययन को दोहराने के कुछ उचित कारण आ सकते हैं। आप पूर्व में प्राप्त किये गये तथ्यों की सत्यता को स्वीकार अथवा अस्वीकार करने में रूचि रख सकते हैं। विशेष तौर से उन परिणामों के संबंध में जिनकी वैधता एवं उपयोगिता शंकाप्रद है।

5 दोहराने का दूसरा कारण यह भी हो सकता है कि आप उस अध्ययन की वैधता दूसरी जनसंख्या पर मालूम करना चाहते हों। एक शहरी आबादी में किये गये शोध को ग्रामीण आबादी पर दोहराया जा सकता है। यहाँ तक कि आप दूसरों के द्वारा अध्ययनों के निष्कर्षो की जाँच दूसरी विधियों एवं उपकरणों से करना चाहते हो तो कर सकते है।

6 आप को अपनी पसंद के क्षेत्र में चल रहे तौर तरीकों में अपने स्वयं के अवलोकन को महत्व देना चाहिए। उदाहरण के तौर पर यदि आप नेतृत्व व्यवहार व विद्यालय वातावरण में रूचि रखते हैं, तो आप विभिन्न प्रकार की विद्यालयी गतिविधियों, विद्यालय कर्मियों के मध्य तथा प्राचार्य एवं कर्मियों के मध्य मानवीय अन्त: क्रियाएँ करने से आपके विचार संशोधित होगें।

7 आप पायेगें कि हर लघु शोध तथा जर्नल्स के अन्त में आगे के अध्ययन के लिए समस्याएँ सुझायी जाती है यह आपकी समस्या चयन के लिए अत्यन्त महत्त्वपूर्ण स्रोत हो सकता है। आपको विभिन्न स्रोतों से प्राप्त समस्याओं की सूची बनानी होगी। आपको इन समस्याओं पर अपने शोध में रूचि रखने वाले साथियों से विचार विमर्श करना होगा। आपको अपने विचारों से अपने मार्गदर्शक को अवगत कराकर शोध समस्या का अध्ययन करना चाहिए।

शोध प्रस्ताव कैसे तैयार करें? (How should you prepare a research proposal)

प्रत्येक शोध का एक प्रस्ताव होता है। लघु शोध करते समय प्रारम्भिक स्थिति में यह बनाया जाता है। शोध प्रस्ताव बनाने के निम्न उद्देश्य हैं -

1 आपके द्वारा किये जाने वाले अनुसंधान के बारे में आप स्वयं के विचारों को स्पष्टता प्रदान करना।

2 अध्ययन की विभिन्न स्थितियों में आगे बढ़ने के लिए मार्ग प्रशस्त करना।

प्रस्ताव बनाने से पूर्व आपको समस्या की पहचान कर लेनी चाहिए, आपको शैक्षिक अनुसंधान के मूल आधारों का अध्ययन कर लेना चाहिए तथा अपनी समस्या से संबंधित साहित्य का अध्ययन कर लेना चाहिए।

शोध प्रस्ताव में निम्न भाग होने चाहिए -

1 प्रस्तावना - अध्ययन की तर्कसंगतता एवं शीर्षक का अभिलेखन

2 उद्देश्यों एवं परिकल्पना का अभिलेखन

3 शोध प्रारूप (Research Design)

4 जनसंख्या एवं शोध का न्याय दर्शन

5 उपकरणों की सूची

6 दत्त संकलन की विधियाँ

7 दत्तों के विश्लेषण की योजना

8 समय विभाजन / निर्धारण

शोध प्रस्ताव में सभी की प्रकृति अनुमान पर आधारित होती है। लघु शोध करते समय हमें हमारे अध्ययन में आवश्यकतानुसार अकस्मात कई परिवर्तन करने पड़ते हैं।

1 प्रस्ताव भाग (Introductory Part) (Justification and statement of the problem)

इस भाग में समस्या के आवश्यक सैद्धांतिक पक्ष, संक्षिप्त में अवधारणाओं का स्पष्टीकरण तथा संबंधित अनुसंधानों के सैद्धांतिक पक्ष से अवगत कराया जाता है। इसमें यह भी स्पष्ट किया जाता है कि आपने इस अध्ययन को क्यों चुना ? अर्थात् आपको अनुसंधान समस्या की तर्कसंगतता / औचित्य बताना होगा। प्रस्ताव भाग में ही यह भी बताया जाता है कि शिक्षा तंत्र के किन - किन ज्ञान व अभ्यास के संदर्भों में इसका क्या उपयोग होगा ? वर्तमान सिद्धांतों के मध्य रिक्तता को यह अनुसंधान किस प्रकार पूर्ण कर सकेगा, इस पर विशेष प्रकाश डाला जाना चाहिए। सर्वेक्षण आधारित अनुसंधानों तथा मध्यस्थता के अध्ययनों में यह बताना चाहिए की किस प्रकार यह अध्ययन वर्तमान शैक्षिक समस्याओं के समाधानों में सहयोग कर सकेगा-

– वर्तमान अनुसंधानों एवं सिद्धांतों के व्यापक संदर्भ में अनुसंधान समस्या किस प्रकार उपयोगी (फिट) होती है ?

– अनुसंधान प्रश्नों में आपको शोध की प्रासंगिकता पर ध्यान केन्द्रित किया जाना चाहिए।

– समस्या का अभिलेखन पूर्णत: विशिष्टीकृत होना चाहिए जैसे -

"सैकेडणरी स्कूल के प्रधानाचार्यो की लिंग, अनुभवों तथा विद्यालय प्रबंधन के संदर्भ में प्रशासनिक दक्षताओं का अध्ययन करना"।

2 अध्ययन के उद्देश्यों एवं परिकल्पना का अभिलेखन

(Writing of Objective and Hypothesis of the Study)-

अनुसंधान विधिशास्त्र (Research Methodology) के पाठ्यक्रम में आप परिकल्पना की प्रकृति एवं इसके स्रोतों के बारे में आप पढ़ चुके हैं। शोध प्रस्ताव बनाते समय आपको शोध के उद्देश्यों तथा परिकल्पना को लिखने में सावधानी बरतनी चाहिए। उदाहरण के तौर पर उपर्युक्त अध्ययन के निम्न उद्देश्य लिखे जा सकते हैं -

(1) विद्यालयों के प्रधानाचार्यो की विभिन्न प्रबंधकीय कार्यो के संदर्भ में प्रशासनिक योग्यताओं के स्तरों का पता लगाना (योजना, संगठन, समन्वय, वित्तीय प्रावधानों तथा मूल्यांकन एवं प्रबोधन)

(2) लैंगिक असमानता, प्रशासनिक अनुभव तथा विद्यालय प्रबंधन की प्रकृति का सैकेण्डरी के विद्यालयों के संस्था प्रधानों की कार्य दक्षता पर प्रभाव का अध्ययन करना।

विभिन्न चरों के मध्य संबंध के विषय में परिकल्पना सुस्पष्ट होनी चाहिए। परिकल्पना दो प्रकार से लिखी जा सकती है। लक्ष्य आधारित तथा शून्य। उदाहरण के तौर पर - शिक्षार्थियों का समूह, जिसे अन्त: क्रियात्मक माध्यम द्वारा ई0टी0वी0 कार्यक्रम दिखाया जाता है, - उल्लेखनीय रूप से अधिक उपलब्धि प्राप्त करेगा, - अपेक्षा उनके जिन्हें प्रत्यक्ष माध्यम (Direct Mode) के ई०टी०वी0 कार्यक्रम दिखाये जाते हैं। यह लक्ष्य निर्धारित परिकल्पना या 'शोध परिकल्पना (Research Hypothesis) कहलाती है। दूसरा उदाहरण है कि - "माध्यमिक विद्यालयों के छात्रों की अध्ययन आदतों व उपलब्धियों के मध्य सकारात्मक / धनात्मक संबंध है ।"

- अत: लक्ष्य निर्धारित या शोध परिकल्पना में अध्ययन किये जाने वाले चरों (Variables) के मध्य संबंध स्थापित किया जाता है जबकि शून्य परिकल्पना में दो चरों के मध्य संबंध नही होना माना जाता है अथवा क्रिया करने के बाद दोनों समूहों (प्रयोगात्मक तथा नियंत्रित) (Experimental & control group) में कोई अन्तर नहीं माना जाता है। उदाहरण के तौर पर अन्त: क्रियात्मक माध्यम अथवा प्रत्यक्ष माध्यम से ई0टी०वी0 दिखाये जाने वाले छात्र समूहों की माध्य उपलब्धि प्राप्तांकों में कोई सार्थक अन्तर नहीं होगा। "

निर्देशित परिकल्पना पूर्व में किये अनुसंधान अथवा पूर्व स्थापित सिद्धान्तों पर आधारित होती है, जबकि शून्य परिकल्पना विभिन्न सांख्यिकीय तकनीकों द्वारा विश्लेषण करने को सुगम बनाने के उद्देश्य से निर्मित की जाती है।

दोनों प्रकार की परिकल्पनाएँ निर्मित करते समय निम्न बातों का ध्यान रखना आवश्यक है-

1 परिकल्पना द्वारा दो अथवा दो से अधिक चरों में संबंध स्थापित किया जाना चाहिए।
2 परिकल्पना के पीछे कोई निश्चित सैद्धांतिक आधार अथवा शोध प्रमाण - पत्र होना चाहिए।
3 परिकल्पना जाँच की जाने योग्य होनी चाहिए। इसका तात्पर्य है कि चर मापन योग्य होने चाहिए एवं चरों में संबंध जाँचने के लिए कोई उपयुक्त सांख्यिकीय विधि उपलब्ध होनी चाहिए।
4 परिकल्पना को स्पष्टता पूर्वक संक्षिप्त में लिखा जाना चाहिए।

एक बार उद्देश्य तथा संबंधित परिकल्पना को निर्धारित कर लेने के बाद अध्ययन सम्पादन के विभिन्न क्रियात्मक पक्षों को समझना सरल हो जाता है।

3 शोध प्रारूप (Research Design) -

शोध प्रारूप का तात्पर्य है, वे परिस्थितियाँ जिनमें दत्तों का संकलन तथा उद्देश्यों को प्राप्त करने की दिशा में परिकल्पना की जाँच की जायेगी। शोध उद्देश्यों को प्राप्त करने के लिए आप कोई सा भी प्रारूप अपना सकते हैं। आपका अध्ययन, सर्वेक्षण, अवलोकनात्मक, प्रयोगात्मक तथा ऐतिहासिक तथा अन्य में से किसी भी प्रकार का हो सकता है। प्रत्येक प्रकार के अध्ययन में आपको दत्तों का प्रकार, दत्त संकलन के स्रोत, जनसंख्या तथा न्यादर्श, प्रयोगात्मक कार्य, दत्त संकलन विधियाँ तथा दत्त विश्लेषण की तकनीक एवं विधियों को उल्लेखित करना होगा।

4 दत्तों के प्रकार एवं स्रोत (Types and Sources of Data) -

दत्त व्यवहारात्मक तथा सकारात्मक हो सकते हैं। व्यवहारात्मक दत्तों में व्यक्तित्व, बुद्धि, प्रतिक्रिया, अभिवृति आदि मानवीय घटक आ जाते हैं जबकि साकार दत्तों में नामांकन, व्यय, कीमत आदि भौतिक घटक आते हैं। आपको यह भी बताना होगा कि आपको संबंधित उद्देश्यों की प्राप्ति के लिए किस प्रकार के दत्तों की आवश्यकता है। आपको यह भी उल्लेखित करना होगा कि आपके दत्त संकलन के स्रोत क्या होंगे ?

5 उपकरण (Tool) -

अध्ययन के उद्देश्यों, दत्तों की प्रकृति एवं स्रोतों को ध्यान में रखते हुए शोधकर्ता को उपकरण का चयन करना चाहिए। आपको कार्य में लिए जाने योग्य उपकरणों की सूची बनानी होगी जैसे प्रश्नावली, प्रतिक्रिया मापनी, उपलब्धि परख तथा विभिन्न प्रकार की जाँच (Psychological Tests) प्रस्ताव में आपको मात्र यह दर्शाना है कि उपकरण पूर्व में उपलब्ध हैं अथवा आपको विकसित करना है।

6 जनसंख्या एवं न्यादर्श (Population and Sample) -

अपने अध्ययन के क्षेत्र को ध्यान में रखते हुए आपको यह भी निर्धारित करना होगा कि आपके अनुसंधानों के परिणामों का किस जनसंख्या तक सामान्यीकरण किया जा सकता है। दूसरे शब्दों में आपको जनसंख्या को देखते हुए उसके अनुकूल न्यादर्श का चयन करना होगा। उदाहरण के तौर पर आपका अध्ययन पूरे राज्य को लक्षित कर सकता है अथवा किसी जिले अथवा तहसील तक सीमित हो सकता है अथवा किसी नगर / कस्बे तक सीमित हो सकता है। आपको उसी जनसंख्या में से न्यादर्श चुनना होगा। आपको जनसंख्या के प्रतिनिधि के रूप में उपयुक्त संख्या में न्यादर्श लेना होगा। न्यादर्श का चयन करने के लिए एक विशेष विधि से गुजरना होगा। न्यादर्श चयन की अनुमानित रूपरेखा आपके क्षेत्रिय कार्य को सुनियोजित / व्यवस्थित करने में पर्याप्त सहयोग करेगी।

7 दत्त संकलन प्रक्रिया (Procedure of Data Collection) -

आपको यह पूर्व में ही निर्धारित कर लेना चाहिए कि आप दत्तों का संकलन किस प्रकार करेंगे। दत्त संकलन के कई तरीके हो सकते हैं, जैसे परखों का प्रशासन, साक्षात्कार लेना, घटनाओं का अवलोकन, लेखा संधारित करना आदि। दत्त संकलन के बारे में पूर्व में विचार कर लेने से आपकी गतिविधियाँ क्रमबद्ध हो जाएंगी।

8 दत्तों का विश्लेषण (Analysis of Data) -

अध्ययन के उपदेश एवं परिकल्पना, उपकरणों की प्रकृति, चरों की प्रकृति एवं न्यादर्श विधि तथा के न्यादर्श आकारों को ध्यान में रखते हुए आपको दत्तों के विश्लेषण के लिए उपयुक्त सांख्यिकी विधि अपनानी होगी। दत्तों के विश्लेषण की संभावित योजना बनाने से आपको कुछ परिकल्पनाओं के परखने, न्यादर्श आकार तय करने, उपकरण तय करने तथा अध्ययन को समाप्त करने की अवधि के बारे में सावधानी बरतने में मदद मिलेगी। दत्तों के विश्लेषण के लिए कई प्रकार की सांख्यिकी - तकनीक काम में ली जा सकती है, जैसे विवरणात्मक, पैरामेट्रिक तथा नॉन - पैरामेट्रिक आदि।

9 अध्ययन का समय विभाजन (Time Schedule of Study) -

यद्यपि आपको निर्धारित समय में अपना लघुशोध प्रतिवेदन प्रस्तुत करना होता है परन्तु आपके अध्यापन व्यवसाय में होने के कारण यह उपयुक्त होगा कि आप अपने लघुशोध प्रबंध के विभिन्न कार्यकलापों का समय निर्धारण कर लें। शोध प्रस्ताव तैयार करने, उपकरण का निर्माण, न्यादर्श चयन, क्षेत्रीय कार्य करने, दत्त संकलन, दत्त विश्लेषण तथा दत्तों की व्याख्या करने एवं प्रतिवेदन लेखन आदि के लिए समय की अनुसूची तैयार कर लेनी चाहिए। इससे कार्य को' समय पर करने में सहायता मिलती है।

II लघु शोध कार्य संपादन के विभिन्न चरण (Different steps for completion of dissertation)

एक बार अपने मार्गदर्शक के परामर्श से संभावित शोध योजना को पूरा करने के बाद आपको शोध के अगले चरणों में बढ़ना होगा। आपको आपके शोध प्रस्तावों में उल्लेखित विभिन्न प्रक्रियाओं को सुव्यवस्थित ढंग से क्रियान्वित करना होगा।

I संबंधित साहित्य का अध्ययन - (Review of related literature)

समस्या पहचानने की प्रारम्भिक अवस्था में अपनी समस्या / क्षेत्र से संबंधित विभिन्न स्रोतों से उपलब्ध साहित्य का अध्ययन उपयोगी होता है। शोध संपादन के दौरान हमें संबंधित साहित्य का विस्तृत अध्ययन करना होता है। एम० ए० शिक्षा के लघुशोध के संदर्भ में आप अपने विषय से संबंधित पूर्व में किये गये एम० ए० लघुशोध तथा पी०एच0डी0 थीसिस का अध्ययन कर सकते हैं। साथ ही आपको पत्र - पत्रिकाओं में छपे अध्ययन प्रतिवेदनों, शोध निष्कर्षो, एन0सी०ई0आर0टी0 तथा दूसरी संस्थाओं द्वारा प्रकाशित शोध प्रतिवेदनों / निष्कर्षो को पढ़ना होगा। विशेष उल्लेखनीय कार्य हैं, इस स्रोत से शोध निष्कर्षो की प्राप्ति एवं उनकी समीक्षा। इसके

गहन अध्ययन से आप आपने शोध की तर्कसंगतता स्थापित कर पायेंगे। अत: आपको सुव्यवस्थित रूप से पुस्तकालय में अध्ययन करना होगा। कुछ कॉलेजों व विश्वविद्यालयों के पुस्तकालयों में विभिन्न शिक्षा क्षेत्रों से संबंधित का कम्प्यूटर आधारित शोध निष्कर्ष उपलब्ध होते हैं। इस संबंध में आपको पुस्तकालयों से सुव्यवस्थित नोट लेने होंगे तथा उनका अपने शोध के संबंध में तर्क पूर्ण उपयोग लेना होगा।

2 शोध की विधियाँ - (Research Methods)

जैसा आप शोध विधिशास्त्र के अध्ययन से यह जान चुके होंगे कि शोध की कई विधियाँ हैं, जैसे दार्शनिक, ऐतिहासिक, सर्वेक्षण, अवलोकनात्मक तथा प्रयोगात्मक आदि। यह आपको निर्धारित करना होगा कि आपके अध्ययन के लिए कौनसी विधि उपयुक्त है।

- जब आप विभिन्न घटनाओं के वर्तमान स्तर का वर्णन करना चाहते हो, तो वर्णनात्मक सर्वेक्षण विधि काम में ली जायेगी।
- जब आप दो या अधिक चरों के मध्य सहवर्ती संबंध (Concomitant Relation) ज्ञात करना चाहते हो, तब आपको सहसंबंधात्मक विधि काम में लेनी होगी।
- जब आपको 'कारण प्रभाव' संबंधों का अध्ययन करना हो तब 'एक्स पोस्ट फेक्टो' विधि
- (Ex Post Facto Method) काम में लेनी होगी। यह संबंध प्राप्त दत्तों के सांख्यिकीय तकनीक से प्राप्त किये जा सकते हैं।
- जब नियंत्रित परिस्थितियों में विशिष्ट उपचार द्वारा कार्य - कारण संबंधों का अध्ययन करना हो, तब प्रयोगात्मक विधि का प्रयोग किया जाता है।इस संबंध में कई प्रकार के प्रयोगात्मक प्रारूप काम में लिये जाते हैं।
- जब आप किसी कार्यक्रम, पाठ्यक्रम, विधि, माध्यम आदि की प्रभावशीलता का अध्ययन करना चाहते हो तो मूल्यांकन - अनुसंधान विधि काम में ली जाती है। आपको अपने अनुसंधान संपादन में विधि विशेष के विभिन्न चरणों का सावधानी के साथ अनुगमन करना चाहिए।

3 जनसंख्या एवं न्यादर्श - (Population and Sample)

जैसा कि आप जानते हैं, कोई भी अध्ययन निश्चित भौगोलिक क्षेत्र, आयु-समूह, विद्यालय शिक्षा की अवस्था, शिक्षा, कक्षा, लिंग आदि के विशेष दायरे में किया जाता है, जिसे जनसंख्या कहा जाता है। कुछ बाधाओं और सीमाओं के कारण आप सम्पूर्ण जनसंख्या का अध्ययन नहीं कर सकते। अत: आपको अपने अध्ययन के लिए न्यादर्श के रूप में सीमा तय करनी पडती है। न्यादर्श विभिन्न दृष्टिकोण से सम्पूर्ण जनसंख्या का प्रतिनिधित्व करता है।

अध्ययन के लिए न्यादर्श चयन की प्रक्रियाएँ में अत्यन्त सावधानी बरतने की आवश्यकता है ताकि आपके अध्ययन के निष्कर्षो का सम्पूर्ण जनसंख्या के लिए सार्वजनिकरण किया जा सकें। न्यादर्श चयन की प्रक्रियाएँ को विस्तार पूर्वक निम्न बिन्दुओं के अन्तर्गत समझा जा सकता है -

- न्यादर्श का प्रकार - जैसे साधारण यादृच्छ (Random) अथवा स्तरीकृत (Stratified) अथवा उद्देश्यनिष्ठ
- न्यादर्श का आकार
- 'भौगोलिक क्षेत्र - जहाँ से न्यादर्श चयन करना है।
- ध्यान में रखे जाने वाली श्रेणी - लिंग, आयु, वर्ग, अनुभव आदि।
- आपको न्यादर्श चयन का स्वरूप निर्धारित करने (सूचना, अनुक्रमणिकाएँ तथा जनसंख्या
- रिकॉर्ड) में अत्यन्त सावधानी बरतनी चाहिए।

न्यादर्श चयन की तकनीक के विवरण के संबंध में आपको शोध विधि शास्त्र की पाठ्य सामग्री ME-04 तथा शैक्षिक अनुसंधानों की विधियों पर पुस्तकों पढ़नी चाहिए।

4 उपकरण -(Tools)

अपने अध्ययन के विभिन्न चरणों का मापन करने के लिए उपयुक्त उपकरणों के बारे में भी पूर्व में ही विचार कर लेना उत्तम है। जैसा कि आप शोध विधि के शास्त्र के पाठ्यक्रम में पढ़ चुके हैं कि शोध सम्पादन हेतु कई उपकरणों का उपयोग किया जाता है, जैसे प्रश्नावली, अनुसूची, साक्षात्कार अनुसूची, प्रतिक्रिया मापनी, अवलोकन अनुसूची, मनोवैज्ञानिक परख (बुद्धि परख, व्यक्तित्व परख, सृजनात्मक परख, अभिवृति परख, उपलब्धि परख आदि)।

उद्देश्यों तथा परिकल्पना की आवश्यकताओं को दृष्टिकृत रखते हुए दत्त संकलन के लिए उपकरणों का चयन करना होता है। कई बार पूर्व में तैयार उपकरण उपलब्ध हो जाते हैं। आपको आपकी समस्या से संबंधित ऐसे उपकरणों की खोज करना चाहिए, जो दूसरे अनुसंधान कार्यो में काम में आया हो। उपकरण को किसी निर्धारित जनसंख्या के लिए मानकीकृत किया जा सकता है । जनसंख्या समानता को ध्यान में रखते हुए आप मानकित उपकरणों का उपयोग कर सकते हैं। कई प्रकरणों में आपको पूर्व निर्मित उपकरण उपलब्ध नही होंगे। आपको अपना वांछित उपकरण निर्मित करना होगा। उदाहरण के तौर पर प्राथमिक स्तर पर न्यूनतम अधिगम सातत्य अथवा मध्यावकाश भोजन योजना के बारे में शिक्षकों की प्रतिक्रिया जानने के लिए आप अपना स्वयं का उपकरण विकसित कर सकते हैं।

उपकरण बनाते समय अथवा चयन करते समय निम्न बातों को ध्यान में रखना चाहिए-

1 वैधता (Validity) - उपकरण वैध होना चाहिए । - जिस चर / घटक को मापने के लिए उपकरण बनाया गया है उसी चर / घटक का मापन करने अर्थात् अपने उद्देश्य की पूर्ति में सक्षम हो।

2 विश्वसनीयता (Reliability) - इसका मापन विभिन्न परिस्थितियों में एक सा हो।

3 उपयोग योग्य (Usability) - जिसका न्यादर्श पर प्रशासन सरल हो तथा जिसका विश्लेषण के लिए अंकन किया जा सके।

अपना स्वयं का उपकरण निर्मित करने के लिए उपकरण निर्माण के चरणों का सावधानी पूर्वक उपयोग किया जाना चाहिए। जैसे -

उद्देश्यों को अभिलिखित करना, जनसंख्या की व्याख्या, उपलब्ध संबंधित उपकरण की समीक्षा, आइटम्स में सेतु निर्माण, आइटम्स की छंटनी, आइटम्स का विश्लेषण, आइटम्स का कठिनता स्तर ज्ञात करना, विभिन्न तरीकों से आइटम्स की वैधता ज्ञात करना, आइटम्स की विश्वसनीयता ज्ञात करना व उपकरण में संशोधन करना आदि।

जैसा शोध विधि शास्त्र में बताया जा चुका है उपकरण निर्माण के कई तरीके हैं। आपको उन्हें ध्यान में रखना चाहिए। विस्तृत मार्गदर्शन के लिए शैक्षिक अनुसंधान एवं शैक्षिक मापन एवं मूल्यांकन स्तर पर पुस्तकें पढ़नी चाहिए।

5 दत्त संकलन (Data) -

एक् बार उपकरण बन जाने तथा न्यादर्श चयन हो जाने के बाद आपको उन स्थितियों का उल्लेख करना होगा, जिसमें कि दत्त संकलन किया जाएगा। उदाहरण के तौर पर प्रयोगात्मक - शोध के मामले में यह उल्लेखित किया जाता है कि किस अवस्था में कौनसा उपचार दिया जाएगा ? किस अवस्था में कौनसी परख तथा उपकरण प्रशासित किया जाएगा ? आदि। सर्वेक्षण शोध अथवा प्रकरण अध्ययन (Case Study) में आपको दत्त संकलन करने की विभिन्न प्रावस्थाओं का उल्लेख करना होगा। उदाहरण के तौर पर एक अवस्था में आपको मूलभूत बैचमार्क दत्त प्राप्त होगें। दूसरी प्रावस्था में आप जाँच प्रशासन तथा साक्षात्कार एवं अवलोकन द्वारा तंत्र के कार्य से संबंधित विशिष्ट दत्तों का संकलन कर सकते हैं। शोध की समयावधि, उपलब्ध स्रोतों, खोज से संबंधित किसी खास घटना की अनुसूची को ध्यान में रखते हुए दत्त संकलन के विभिन्न तरीकों के बारे में आपको सावधानी रखनी चाहिए। विभिन्न तरीकों जैसे व्यक्तिगत प्रशासन, परख, साक्षात्कार लेना, प्रत्यक्ष अवलोकन, उपकरण का मंगाना व प्रशासित करना, किसी विश्वसनीय तथा निपूर्ण व्यक्ति द्वारा अवलोकन करना आदि द्वारा दत्त संकलन किया जा सकता है। आपको दत्तों का संकलन निर्धारित समय में पूर्ण कर लेना चाहिए ताकि आप उस घटना से वंचित न रहें, जिसका आप अध्ययन करना चाहते हैं। आपकी प्रबोधन स्थिति तथा दत्त संकलन की प्रक्रियाएँ में सामंजस्य होना आवश्यक है।

6 दत्तों का अंकन (Data) -

शोध के दत्तों के संकलन के बाद आपको उन्हें उस रूप में बदलना होगा, जिसका सांख्यिकीय विश्लेषण आसानी से हो सके। जाँच का अंकन किया जाना चाहिए। यदि प्रश्नावली में बहुविकल्पी प्रश्न दिये जाते हैं तथा श्रेणीवत मापनी काम में ली जाती है, तो नियमानुसार उपयुक्त अंकन किया जाना चाहिए। साक्षात्कार अथवा अवलोकन द्वारा प्राप्त गुणात्मक दत्तों को संग्रहित कर कोडिंग किया जाना चाहिए। समस्त दत्तों का इस प्रकार कोडिंग किया जाना चाहिए कि बिना किसी गलती के साथ निर्विरोध विश्लेषण किया जा सके। अनुसंधान में गलतियों से बचने तथा शोध दत्तों का अधिकतम परिणाम प्राप्त करने की दृष्टि से आपको सुनियोजित प्रक्रिया अपनानी चाहिए। आप दत्तों का अंकन मानवीय शक्ति से अथवा कम्प्यूटर से कर सकते हैं।

7 विश्लेषण एवं व्याख्या - (Analysis and Interpretationof)

दत्त विश्लेषण का मुख्य केन्द्र कई घटकों पर निर्भर करता है, जैसे अध्ययन के उद्देश्य एवं परिकल्पना, चरों की प्रकृति, चरों के मापने में अंकन की प्रकृति, जनसंख्या के वितरण की प्रकृति आदि। यदि उद्देश्य घटनाओं की व्याख्या करना हो, तो विवरणात्मक तकनीकों (जैसे केन्द्रीय प्रवृत्तियों के माप (Measure of Central Tendency) -मध्यमान,(Mean) बहुलांक (Mode) मध्यांक (Median)] मानक विचलन का माप, चतुर्थक विचलन (Quartile Deviation) (क्वार्टाइल डेवियेशन), प्रसार क्षेत्र (Range)] औसत विचलन (Average Deviation), प्रमाप विचलन Standred Deviation), रेखा-चित्रीय प्रदर्शन (Graphical Presentation), प्रतिशतता (Percentile) आदि का प्रयोग कर सकते हैं।

यदि उद्देश्य सहवर्ती संबंधों तथा आकस्मिक संबंधों के बारे में परिकल्पना का सत्यापन करना है, तो आपको

कोई उपयुक्त सह संबंधात्मक विधि (Correlation Method) तथा सांख्यिकीय निष्कर्षो को चुनना होगा। अंकन की प्रकृति द्वारा सांख्यिकी तकनीक निर्धारित की जाती है। बुद्धि एवं उपलब्धि जैसे चरों को पेरामेट्रिक तकनीक जैसे टी

टेस्ट के माध्यम से अनवरत / अनुपात मापनी द्वारा मापा जाता है जबकि लिंग तथा कक्षा जैसे चरों को, जो कि द्विध्रुव प्रकृति के है, इन्हें अप्राचलिक तकनीक जैसे X^2 टेस्ट द्वारा मापा जाता है। अप्राचलिक तकनीक के माध्यम से वर्गीकृत मापनी (Rating Scale) द्वारा शृंखला अंकन किया जाता है।

जनसंख्या वितरण सामान्य हो अथवा असामान्य उसी के आधार पर सांख्यिकी - तकनीक का निर्धारण किया जाता है। इसी प्रकार जनसंख्या में से अविचारित या यादृच्छिक न्यादर्श (Random Sample) लेने पर पेरामैट्रिक तकनीक तथा सौद्देश्य न्यादर्श लेने पर अप्राचलिक तकनीक काम में ली जाती है।

प्रत्येक तकनीक के बारे में विशेष मान्यताओं के संदर्भ में आपको उपयुक्त सांख्यिकी चुनने में बहुत सावधानी बरतनी चाहिए। आपको विशिष्ट उद्देश्य एवं विशिष्ट सांख्यिकी से सामंजस्य रखना चाहिए। उनमें से कुछ को यहाँ पर संक्षिप्त में सारणी के रूप में प्रस्तुत किया जा रहा है। यहाँ पर कुछेक सांख्यिकी तकनीक को ही प्रस्तुत किया जा रहा है, शेष के बारे में अनुसंधान विधि शास्त्र तथा शैक्षिक सांख्यिकी की पुस्तकों से पढ़ा जा सकता है।

क्रम.स.	सांख्यिकी के प्रकार	उद्देश्य
1.	सह-संबंधीय सांख्यिकी(Correlational Statistics)	
	I प्रोडक्ट मूमेन्ट कोरिलेशन	दो चरों के मध्य संबंधों की प्रगाढ़ता का पता लगाना
	I I रैंक डिफरेन्स कोरिलेशन	
	I I I कन्टिन्जेन्सी कोरिलेशन	
2.	2अनुमानीय सांख्यिकी (Inferential Statistics)	
	सांख्यिकी महत्ता की जाँच	

प्राचलिक (Parametric)	
I **'t'** टेस्ट (क्रान्तिक अनुपात)	यह पता लगाना कि दो मध्यमानों अथवा सहसंबंध गुणाकों में सकारात्मक अन्तर है अथवा नहीं।
I I प्रसरण का विश्लेषण	यह पता लगाना कि एक या एक से अधिक (ANOVA) घटकों के प्रभाव से प्राप्तांकों के मध्यमानों में क्या सकारात्मक अन्तर है?
अप्राचलिक (Non-Parametric)	
I मेन विट्ने यू टेस्ट	यह पता लगाना कि क्या दो असंबंधित मध्यमानों में एक दूसरे से उल्लेखनीय भिन्नता है ?
I I काई - वर्ग टेस्ट	यह पता लगाना कि क्या दो आवृत्ति वितरण एक दूसरे से सकारात्मक अन्तर रखता है?

उपयुक्त सांख्यिकी तकनीक का निर्धारण कर लेने के बाद आप स्वयं गणना द्वारा अथवा कम्प्यूटर की सहायता से दत्त संकलन की ओर बढ़ सकते हैं। Microsoft Excel, स्टेटिस्टिकल पैकेज फॉर सोशल साइंस' (Statistical Package for Social Sciences(SPSS) पैकेज में पर्याप्त संख्या में सांख्यिकी तकनीकें वर्णित हैं। आप निकटस्थ कम्प्यूटर केन्द्र की सहायता से शोध की आवश्यकता के अनुरूप दत्तों का अंकन एवं विश्लेषण कर सकते हैं। एक बार दत्तों का विश्लेषण हो जाने तथा उनका सारणीयन (Tabulation) हो जाने अथवा रेखाचित्र के रूप में प्राप्त हो जाने के बाद अगला कार्य है निष्कर्षो की प्राप्ति। जाँच की जाने वाली परिकल्पना (शून्य परिकल्पना) निष्कर्ष प्राप्ति का आधार बनती है। उदाहरण के तौर पर एक शून्य परिकल्पना में दो मध्यमान प्राप्तांकों के बीच में 0.5 स्तर का अन्तर दर्शाया

गया हो, निष्कर्ष प्राप्ति का आधार माना जा सकता है। यदि प्राप्त ० अथवा ० का अनुपात बराबर रहता है अथवा सारणी में दिया गया t अथवा z के मान से डिग्री आफ फ्रीडम के विरूद्ध 95% विश्वसनीयता स्तर पर उल्लेखनीय रूप से ऊपर रहता है, तो शून्य सार्थक अन्तर (NO Significant Difference) की नल परिकल्पना लागू नहीं होगी। यदि उल्लेखनीयता का स्तर .01 रहता है तो डिग्री आफ फ्रीडम के विरूद्ध सारणी में दर्शाये गए t व z के मान के अनुरूप 99% विश्वसनीयता स्तर पर निष्कर्ष निकाला जायेगा। इस प्रकार X^2 सांख्यिकी जैसे जाँच तथा प्रसरण -विश्लेषण (Analysis of Variance) में किया जाएगा। अत आपको परिकल्पना का सत्यापन करने, न्यादर्श का आकार, उल्लेखनीयता का स्तर तथा सांख्यिकी

विधियों का सारणी मान काम में लेने में सावधानी बरतनी चाहिए। अधिक जानकारी प्राप्त करने के लिए 'शिक्षा अनुसंधानों में सांख्यिकी' विषय पर पुस्तकें पढ़ना चाहिए।

गुणात्मक आकडों की तर्क संगत कार्य योजना द्वारा व्याख्या की जा सकती है, ताकि अध्ययन का कोई अर्थ प्राप्त किया जा सके।

III अनुसंधान प्रतिवेदन तैयार करना (Preparation of Research Report)

लघुशोध प्रस्तुत करने के कई प्रारूप हैं । प्रचलित प्रकार निम्नानुसार है -

I प्रारम्भिक सामग्री-

1. शीर्ष - पृष्ठ (शीर्ष पृष्ठ का प्रारूप पुस्तक के अंत में संलग्न है) संलग्नक -1.
2. मार्गदर्शक का प्रमाण पत्र (मार्गदर्शक प्रमाण पत्र का प्रारूप अंत में संलग्न है) संलग्नक -2.
3. आभार (विद्यार्थी द्वारा सहयोगियों को दिया जाने वाला आभार अभिवादन)
4. अनुक्रम (शोध के अध्यायों की अनुक्रमणिका)
5. सारणियों की सूची
6. चित्रों की सूची

I I लघु शोध का मुख्य भाग -

अध्याय - 1 प्रस्तावना

(1) प्रस्तावना, अध्ययन की तर्कसंगतता
(2) समस्या को उल्लेखित करना
(3) उद्देश्य, परिकल्पना
(4) शब्दों को परिभाषित करना

अध्याय - 2 साहित्य का समीक्षात्मक अध्ययन

(1) पूर्व में लिए अनुसंधानों की समीक्षा
(2) पूर्व अनुसंधानों के संदर्भ में अध्ययन की तर्कसंगतता

अध्याय - 3 विधियाँ तथा प्रक्रियाएँ

(1) अनुसंधान प्रारूप
(2) दत्तों की प्रकृति एवं स्रोत
(3) जनसंख्या एवं न्यादर्श
(4) उपकरण
(5) दत्तों का संकलन एवं अंकन की विधियाँ

अध्याय - 4 विश्लेषण एवं व्याख्या

(1) सांख्यिकी प्रक्रिया पर एक नजर

(2) सारिणी के रूप में परिकल्पना वार तथा उद्देश्यवार विश्लेषणात्मक प्रस्तुती तथा व्याख्या / विवेचन करना

अध्याय - 5 सार संक्षेप एवं निष्कर्ष

(1) अनुसंधान समस्या तथा विधि का सार
(2) प्रमुख निष्कर्ष
(3) उपसंहार
(4) उपयोगिताएँ
(5) संदर्भ सामग्री
(6) संदर्भ ग्रन्थ
(7) परिशिष्ट

आपको प्रतिवेदन प्रस्तुतीकरण के प्रत्येक घटक के बारे में पूरी सावधानी बरतनी चाहिए। लघुशोध के मुख्य भाग का प्रस्तुतीकरण व्यवस्थित होना आवश्यक है। यहाँ हमने पाँच अध्यायों की अध्याय योजना (Chapterisation) प्रस्तुत की है। कई अध्याय योजनाओं में से यह एक है। आप अपने मार्ग दर्शक से विचार - विमर्श के उपरान्त अध्याय योजना की अन्य प्रणाली भी अपना सकते हैं। चाहे कोई भी प्रणाली आप अपनायें, आपको अपने कार्य संपादन का सुव्यवस्थित एवं वस्तुनिष्ठ प्रतिवेदन प्रस्तुत करने में सावधानी रखनी चाहिए।

आपके शोध प्रस्ताव में आपको समस्या के बारे में संक्षिप्त रूप में समस्या का प्रस्तुतीकरण औचित्य, उद्देश्य एवं परिकल्पना प्रस्तुत करना चाहिए। आप अपने अनुसंधान से संबंधित कुछ अध्ययनों का भी अवलोकन करते हैं। प्रतिवेदन लिखते समय आपको प्रथम अध्याय (प्रस्तावना) तथा द्वितीय अध्याय (साहित्य की समीक्षा) लिखते समय आपको इन बिन्दुओं को विस्तार पूर्वक बताना चाहिए। विशेष तौर से साहित्य की समीक्षा के संदर्भ में आपको संबंधित पाठ्य सामग्री (पी०एच0डी0 थीसिस, एम०एड0 लघुशोध, अनुसंधान परियोजना का प्रतिवेदन, अनुसंधान लेख, सार एवं ट्रेण्ड प्रतिवेदन आदि) का विस्तृत विवरण देना चाहिए। अनुसंधान के संदर्भ में अध्ययन की गई समस्त पाठ्य सामग्री का विस्तृत एवं पूर्ण विवरण सूचीबद्ध किया जाना चाहिए।

विधि एवं प्रक्रिया के अध्याय में उस सम्पूर्ण प्रक्रिया का वर्णन किया जाना चाहिए, जो शोधकर्ता ने अपने लघुशोध के लिए अपनाया है। इसमें आपको विभिन्न चरणों जैसे शोध प्रारूप, दत्तों की प्रकृति एवं स्रोत, जनसंख्या एवं न्यादर्श, उपकरण, दत्तों के संकलन की विधियाँ एवं उनका अंकन आदि में शोध प्रस्ताव से हटकर भी कार्य करना पड़ सकता है। प्रतिवेदन में आपको शोध प्रक्रिया के विभिन्न चरणों का नियमबद्ध प्रस्तुतीकरण करना होगा। विश्लेषण एवं विवेचन वाले अध्याय एकदम विशिष्ट होने चाहिए तथा उनका उद्देश्यवार प्रस्तुतीकरण करें। प्रत्येक उद्देश्य को परिकल्पना के सत्यापन से जोडा जा सकता है। प्रत्येक उद्देश्य के लिए तथा प्रत्येक शून्य परिकल्पना के सत्यापन के लिए काम में ली जाने वाली सांख्यिकी विधि का भी वर्णन करें। विशेष प्रकार की सांख्यिकी तथा उससे संबंधित तकनीक काम में लेने की तर्क संगतता को संक्षिप्त में लिखें। शून्य परिकल्पना तथा प्रत्येक शोध प्रश्न के संदर्भ में आपको सारणी के रूप में विश्लेषण प्रस्तुत करना होगा, जिसमें आपको समस्त सांख्यिकी गुणों को प्रदर्शित करना होगा। विशेष सांख्यिकी विश्लेषण युक्त प्रत्येक सारणी की व्याख्या की जानी चाहिए। परिकल्पना के सत्यापन

के मामले में आपको संबंधित सांख्यिकी सारणी का मान ध्यान में रखते हुए उपयुक्त व्याख्या करनी चाहिए।

विभिन्न उद्देश्य तथा परिकल्पना से संबंधित विश्लेषण एवं व्याख्या के बाद आपको अध्याय के अन्त में निष्कर्ष लिखना चाहिए।

अन्तिम अध्याय में प्रमुख निष्कर्ष, व्याख्या तथा उपयोगों के साथ आपके अध्ययन का सार - संक्षिप्त में प्रस्तुत किया जाना चाहिए। इसमें संक्षेप में अध्ययन की तर्कसंगतता, समस्या का लेखन, उद्देश्य एवं परिकल्पना तथा अध्ययन में काम में आने' वाली विधियाँ एवं प्रक्रियाओं का उल्लेख किया जाता है। इसी के साथ शोध के प्रमुख निष्कर्षो पर प्रकाश डाला जाता है तथा संबन्धित अनुसंधानों के प्रकाश में शोध के निष्कर्षो पर विचार विमर्श किया जाता है। साथ ही विशेषत: प्राप्त निष्कर्षो के कारणों तथा शोध अध्ययन के उपयोग पर प्रकाश डाला जाता है। यहाँ शोधकर्ता को इस बात पर भी प्रकाश डालना चाहिए कि उसका शोध अध्ययन शिक्षा जगत में सुधार के लिए किस प्रकार उपयोगी होगा। यह बताया जाना उपयुक्त है कि प्रस्तुत शोध से संबंधित उभरती हुई शोध समस्याओं के बारे में कौनसे अतिरिक्त कदम उठाए जा सकते हैं ?

अन्त में उपयुक्त संदर्भ ग्रन्थों की सूची का ध्यानपूर्वक अध्ययन करें। अपने अपने अध्ययन से पूर्व या दौरान जिन ग्रंथों, पुस्तकों, पत्रिकाओं, लेख, शोध सार तथा एनसाइक्लोपीडिया का अध्ययन किया हो उनका निर्धारित क्रम से उल्लेख करें। लेख / संपादक का उपनाम (Surname) तथा संक्षिप्त नाम, पुस्तक का शीर्षक, लेख / सार का शीर्षक, प्रकाशन स्थल, प्रकाशन वर्ष आदि को क्रम वार लिखे।

संदर्भ ग्रंथों की सूची का उल्लेख करने हेतु कुछ उदाहरण निम्नानुसार है -

Books

- Anand, S. - University Without wall., New Delhi : Vikas., 1979
- Keegan, D. - Foundations of Distance Education, Second Ed. London : Routledge,1990.
- Buch, M.B. (Ed.) Fourth Survey of Research in Education, Vol. I & II, NCERT,New Delhi, 1991.

Research Articles

- Singh J.,The Open School, Journal of Educational Planning and Administration,
- Vol : 2 : Nos.3 & 4,1988.
- Mohanty, J and Sahoo, H.K.,CWCR T V Programmes, University News
- Vol : XXIX, Nos, 50, Dec, 16, 1991.
- Dash,N.K.,Reactions of Primary School Teachers Towards Training Through Vol : 6, Nos. 1 & 2, 1997

Dissertation / Ph.D. Thesis

- Goel,D,R.,-A Study of School Broadcasts in India, Unpublished Ph.D.Thesis M.S.University Baroda, 1982.
- Rana, T., A Study of Attitude of Students of M.S.University of Baroda towards Distance Education, Unpublished M.Ed. Dissertation, M.S.University Baroda, 1986.

संदर्भ ग्रंथों की सूची के अतिरिक्त आप परिशिष्ट के रूप में आप द्वारा लाये गयें उपकरण (परख पत्रादि), प्रश्नावली, साक्षात्कार अनुसूची आदि भी सम्मिलित कर सकते है। इसके अतिरिक्त अन्य महत्वपूर्ण दस्तावेज भी संलग्न कर सकते है। परिशिष्ट में विशेषज्ञों की सूची, कभी-कभी विभिन्न चरों के प्रारम्भिक प्राप्तांक भी सम्मिलित किये जाते है। लघुशोध प्रतिवेदन बनाने के लिए निकटस्थ पुस्तकालय में पी. एच. डी. थीसिस अथवा एम. एड. के लघुशोध का विहंगावलोकन कर लेना चाहिए।

(इस लघु शोध की रूपरेखा शिक्षा विभाग, वर्धमान महावीर खुला विश्वविद्यालय के द्वारा तैयार की गई थी। इसके सृजन व निर्माण में तत्कालीन विभागाध्यक्ष प्रो. पी० के० साहू की मुख्य भूमिका रही है। एम० ए० शिक्षा के लिए इसमें परिवर्तन व संशोधन वर्तमान विभागाध्यक्ष डा० दामीना चौधरी के द्वारा किया गया।)

परिशिष्ट - I

(एम० ए० शिक्षा के हेतु लघु शोध प्रस्ताव-एक उदाहरण)

बड़ौदा नगर के माध्यमिक विद्यालयों के प्रधानाचार्यो की प्रशासनिक दक्षताओं एवं समस्याओं का अध्ययन

प्रस्तावना

शिक्षा बोर्ड्स विद्यालय के लिए कुछ उद्देश्य स्थापित करते है, उन उद्देश्यों के क्रियान्वयन के लिए कुछ नीतियां निर्धारित करनी पडती है तथा उन नीतियों को लागू करने के लिए प्रधानाचार्य की नियुक्ति की जाती है। विद्यालय में इसकी वैधानिक आवश्यकता के अतिरिक्त किसी बडे एवं जटिल संगठन के रूप में विद्यालय का प्रशासन चलाने के लिए प्रधानाचार्य की आवश्यकता होती है। अत: प्रधानाचार्य में व्यवहार कुशलता, संवेदनशीलता, सकारात्मक नेतृत्व क्षमता आदि गुणों का होना आवश्यक है।

विशेष तौर से भारत में शैक्षिक प्रशासकों का चयन / नियुक्ति सामान्यतया शैक्षिक धारा से ही वरिष्ठता के आधार पर ही की जाती है। परन्तु प्रश्न उठता है कि क्या शैक्षिक वरिष्ठता के आधार पर प्रशासनिक क्षमताएँ तथा प्रशासनिक दक्षताएँ उत्पन्न हो जाती है ? एक शैक्षिक प्रकाशक को अधिकांशत: अत्यधिक परिवर्तनशील परिस्थितियों में कार्य करना पडता है। उसे आयोजनों, संगठन नियंत्रण, समन्वयन, लेखा संधारण, प्रतिवेदन तथा बजट संबंधित कार्य करने होते है। ऐसे शोध साक्ष्य कम मिलते है, जो शैक्षिक योग्यताओं एवं प्रशासनिक दक्षताओं में सह संबंध स्थापित करते हो।

संबंधित साहित्य का अध्ययन

प्रधानाचार्यों की प्रशासनिक दक्षताओं एवं समस्याओं से संबंधित विभिन्न घटकों का अध्ययन ही पूर्व अनुसंधानों की समीक्षा का ध्येय है।

दास, एम० (1983) ने प्रधानाचार्यो के प्रशासनिक व्यवहार के अध्ययन में पाया कि -

(1) माध्यमिक विद्यालयों के प्रधानाचार्यो द्वारा के किये गये अधिकांश प्रशासनिक कार्य औसत दर्जे का प्रभाव छोडने वाले होते है।

(2) शिक्षकों की कार्य के प्रति अभिरूचि तथा प्रधानाचार्य के प्रशासनिक व्यवहार में सकारात्मकता एवं उल्लेखनीय संबंध होता है।

(3) जिस विद्यालय में उच्च प्रशासनिक व्यवहार कुशल प्रधानाचार्य होता है, छात्रों में ज्यादा संतोष होता है, अपेक्षा निम्न प्रशासनिक कुशलता वाले प्रधानाचार्य के।

कुमार, यू (1966) ने कार्य मूल्य, अभिवृति तथा स्व अवधारणा के संबंध में प्रधानाचार्यो की प्रशासनिक प्रभावशीलता के अध्ययन में निम्न निष्कर्ष स्थापित किये है -

1 प्रधानाचार्यों के कार्य - मूल्य तथा प्रशासनिक प्रभावशीलता में उल्लेखनीय संबंध है।

2 छात्रों, अध्यापकों एवं मंत्रालयिक कर्मचारियों के प्रति प्रधानाचार्य का व्यवहार उसके प्रशासनिक कार्य कलापों का एक महत्वपूर्ण घटक है।

3 स्व अवधारणा एवं आत्म विश्वास प्रशासनिक प्रभावशीलता का महत्वपूर्ण निर्धारक है।

देवता, एन0 पी० (1989) ने अपने माध्यमिक विद्यालयों के प्रधानाचार्य के प्रभावशाली नेतृत्व व्यवहारों के लक्षण नामक शोध में पाया कि प्रशासनिक व्यवहार नेतृत्व व्यवहार से संबंधित है। जिन प्रधानाचार्यों को नेतृत्व. व्यवहार में उच्च प्राप्तांक प्राप्त है, उन्होंने प्रशासनिक व्यवहार में भी उच्च प्राप्तांक प्राप्त किये हैं। मूल्य शक्तिशाली प्रेरक है, परन्तु सभी मूल्य नहीं, मात्र दक्षता प्रभावी पायी गई है।

सिंह0 पी० (1992) 'ने माध्यमिक विद्यालयों के प्रधानाचार्यो के शैक्षिक प्रबन्धन प्रशिक्षण आवश्यकताओं की पहचान शोध में पाया है कि प्रधानाचार्य अपने बारे में बहुत उच्च धारणाएं रखते है, जबकि अध्यापक अनुभव करते है कि प्रधानाचार्य में प्रशासनिक प्रबन्धन की बहुत निम्न दक्षता है ।

पण्डया, भू के० (1994) ने बडौदा के माध्यमिक विद्यालयों के प्रधानाचार्यो द्वारा उनके शैक्षिक स्टॉफ के साथ व्यवहार करते समय आने वाली समस्याओं का अध्ययन किया। उन्होंने अपने अध्ययन में पाया कि 72.7 % प्रधानाचार्य नये अध्यापकों का चयन करते समय विद्यालय नियमों का पालन करते है। 63.6 % प्रधानाचार्य हमेशा शैक्षिक एवं व्यावसायिक दक्षता के आधार पर अध्यापकों का चयन करते है। 9 % प्रधानाचार्य कभी -कभी ही शैक्षिक एवं व्यावसायिक दक्षता को अध्यापकों के चयन का आधार बनाते है। 63.6 % प्रधानाचार्य अपने अध्यापकों से नियुक्ति में प्रबन्ध द्वारा पक्षपात नही करने की बात कहते है। 54.5 % विवाद को आपसी सुलह द्वारा निपटाते है जबकि शेष 45.4 % समझौता नही करते है।

अध्ययन की तर्कसंगतता

प्रशासनिक दक्षता प्रबन्धकों (Managers) के व्यवहार का प्रमुख घटक है। विशेष तौर से विद्यालयों के प्रधानाचार्यो में विद्यालयों की गतिविधियों के प्रभावी प्रबंधन की दृष्टि से प्रशासनिक दक्षताएँ विकसित होना चाहिए। सामाजिक व्यवहार की दृष्टि से पुरूष एवं महिला सदस्यों में अलग- अलग प्रारूप सामने आते है। अनुभव के आधार पर प्रशासनिक दक्षता में सुधार आता है। यह भी एक जिज्ञासा हो सकती है कि कम अनुभव वाले तथा अधिक अनुभव वाले प्रधानाचार्यो की प्रशासनिक दक्षताओं में उल्लेखनीय अन्तर है अथवा नही ? गैर सरकारी (निजी) और सरकारी विद्यालयों में कार्य संपादन का प्रारूप पृथक -पृथक होता है। अत: हमें जानना चाहिए कि प्रशासनिक दक्षता को विभिन्न चर किस प्रकार प्रभावित करते है ? विभिन्न प्रकारों, विभिन्न माध्यमों के विद्यालयों में प्रशासनिक दक्षता विद्यालय विशेष भाषायी वातावरण पर निर्भर करती है। इसी प्रकार के अन्य भी कई प्रश्न है -

1. वर्तमान प्रधानाचार्यो की दक्षताएँ क्या है ?
2. प्रशासनिक सिद्धांतों तथा व्यवहार में क्या रिक्तताऐं (Gaps) है ?
3. क्या प्रधानाचार्य अपनी प्रशासनिक क्षमताओं का उचित उपयोग करने में सक्षम है ?
4. प्रधानाचार्यो द्वारा अनुभव की जाने वाली समस्याओं की प्रकृति किस प्रकार की है ?
5. क्या प्रधानाचार्यो में दक्षताएँ विकसित करने की आवश्यकता है ?

6. क्या लिंग, अनुभव, विद्यालय प्रबंध तथा निर्देशन का माध्यम आदि स्वतंत्र चर प्रधानाचार्यो की प्रशासनिक दक्षता को प्रभावित करते है ?

प्रस्तावना

"बडौदा नगर के माध्यमिक विद्यालयों के प्रधानाचार्यो की प्रशासनिक दक्षताओं एवं समस्याओं का अध्ययन"

तकनीकी शब्दों की परिभाषा

दक्षता - व्यावहारिक परिस्थितियों में किसी भी कार्य को करने के लिए जिन अवधारणाओं, सिद्धांतों, कौशलों तथा अभिवृतियों की आवश्यकता होती है, - दक्षता कहलाती है।

प्रशासनिक दक्षता - आयोजन निर्णय, संगठन, समन्वयन, संचार, प्रबोधन, मूल्यांकन, नियंत्रण, वित्तीय कार्य, वार्षिक लेखा आदि विभिन्न प्रशासनिक कार्यो में काम आने वाली दक्षताएँ जिन्हें अनुसंधान कर्ता द्वारा निर्मित प्रशासनिक दक्षता मापनी द्वारा मापा जा सकें, - प्रशासनिक दक्षता कहलाती है।

अध्ययन के उद्देश्य -

I. बडौदा नगर के माध्यमिक विद्यालयों के प्रधानाचार्यो की निम्न प्रशासनिक क्षेत्रों में प्रशासनिक दक्षता का अध्ययन करना -

(1) आयोजना एवं निर्णयन
(2) संगठन
(3) समन्वयन एवं संचार
(4) प्रबोधन, मूल्यांकन एवं नियंत्रण
(5) वार्षिक आय-व्यय एवं वित्तीय कार्य

II बडौदा नगर के माध्यमिक विद्यालयों के प्रधानाचार्यो का विभिन्न चरों (i) लिंग (ii) प्रशासनिक अनुभव (iii)विद्यालय प्रबंध का प्रकार तथा (iv) निर्देशों का माध्यम की पृष्ठभूमि में प्रशासनिक दक्षता के संबंध में अध्ययन करना।

III बडौदा नगर के माध्यमिक विद्यालयों के' प्रधानाचार्यो की समस्याओं का अध्ययन करना।

परिकल्पना -

1. बडौदा नगर के माध्यमिक विद्यालयों के स्त्री एवं पुरूष प्रधानाचार्यो की प्रशासनिक दक्षताओं के मध्यमानों में कोई उल्लेखनीय अन्तर नहीं है।
2. बडौदा नगर के माध्यमिक विद्यालयों के कम अनुभवी तथा अधिक अनुभवी प्रधानाचार्यो की प्रशासनिक दक्षताओं के मध्यमानों में कोई अन्तर नहीं है।
3. बडौदा नगर के प्राईवेट एवं सरकारी प्रबंध वाले माध्यमिक विद्यालयों के प्रधानाचार्यो की प्रशासनिक दक्षताओं के मध्यमानों में कोई उल्लेखनीय अन्तर नहीं है।
4. बडौदा नगर के गुजराती एवं अंग्रेजी माध्यम वाले माध्यमिक विद्यालयों के प्रधानाचार्यो की प्रशासनिक दक्षताओं के मध्यमानों में कोई उल्लेखनीय अन्तर नहीं है।

योजना एवं कार्य विधि -

जनसंख्या - बडौदा नगर के समस्त माध्यमिक विद्यालयों के प्रधानाचार्य अध्ययन के लिए जनसंख्या माने जायेंगे।

न्यादर्श - समस्त प्रधानाचार्य की सूची में से रेण्डम तौर पर 100 प्रधानाचार्य न्यादर्श के रूप में चुने जायेंगे।

उपकरण - अनुसंधानकर्ता द्वारा निर्मित प्रशासनिक दक्षता प्रश्नावली अध्ययन में काम में ली जाएंगी। इस प्रश्नावली

में निम्न क्षेत्रों में प्रश्न होंगे -

(i) आयोजन एवं निर्णयन

(ii) संगठन

(iii) समन्वयन एवं संचार

(iv) प्रबोधन मूल्यांकन एवं नियंत्रण

(v) बजट एवं वित्तीय कार्य

प्रधानाचार्यो द्वारा अनुभव की जाने वाली समस्याओं पर स्वतंत्र आइटम्स होंगे।

<u>दत्त संकलन</u> - शोध कर्ता द्वारा व्यक्तिगत रूप से विद्यालयों में जाकर न्यादर्श प्रधानाचार्यो पर उपकरण प्रशासन द्वारा दत्तों का संकलन किया जाएगा।

<u>दत्त विश्लेषण</u> - विवरणात्मक सांख्यिकी तकनीक (जैसे मध्यमान, मानक विचलन तथा प्रतिशत) द्वारा दत्तों का संकलन किया जायेगा। परिकल्पना के सत्यापन के लिए 't' टेस्ट काम में लिया जायेगा।

संदर्भिक साहित्य

1. Alpern,M.`The development and validation of instruments used to ascertain school principals pattern of behaviour `in J.M.Mahajan(ed.) Supervisory role of school principals, Arya Book Depot, New Delhi,1947.

2. Das,M., `A Study of the Administrative Behaviour of Secondary School principal in relation to selected school variables`Ph.D. (Edu.) Abstract in M.B.Buch(ed) Fourth survey of Educational Research,NCERT,New Delhi, 1991.

3. Deota, N.P.,A Study of the Characteristic of Effective Leadership Behaviour of Secondary School Principal 'unpublished Ph.D (Edu.)Thesis CASE, M.S. University, Baroda, 1989.

4. Kumar, U., `A Study of Collage Principals Administrative Effec-Tiveness inj

Relation to their work-values, Attitudes and self-concepts Ph.D. (EDU.),Ab

Stract in M.B.Buch (ed.) Fourth survey of Educational Research, NCERT. New Delhi, 1991.

5. Panday, U., `A Study of Problems Faced by Secondary School Principals While Dealing With the Teaching Staff in Baroda` Unpublished M.Ed.,dissertation CASE, M.S.University Baroda,1994.

6. Singh, P., `Identification of Training Need for Academic Management of the Principals of Secondary 'unpublished. M.Ed., Dissertation CASE, M.S.University, Baroda, 1992.

आभार

इस आलेख को डा० (श्रीमति) सी० गोयल के मार्गदर्शन में उच्च अध्ययन शिक्षा केन्द्र (CASE), एम० एस० विश्वविद्यालय, बडौदा के एम० के0 अरनेस्ट द्वारा प्रस्तुत एम० एड0 लघुशोध प्रस्ताव को परिशिष्ट के रूप में प्रस्तुत किया गया है। पाण्डुलिपि में संपरिवर्तन एवं संपरिवर्द्धन के लिए डा० अनिल शुक्ला, डा० एम० पी० गुप्ता एवं डा० आर० एस0 मणि को आभार प्रदर्शित किया जाता है।

Certificate from the Supervisor (Guide)

Certificate

Certificate that Mr. / Mrs. (Student Name), M.A. Education Student, (Scholar No.), has carried out the dissertation Work entitled.....
.....
.....(Title of the Topic).....for the Partial fulfilement of the requirements of the degree of M.A. IN EDUCATION under my guidance and supervision and completed the same to my satisfaction

(Signature)

(Name of the Supervisor)

Date.....

Placee.....

(एम० ए० शिक्षा हेतु लघु शोध प्रबंध के मुख्य पृष्ठ का प्रारूप)

(शोध शीर्षक लिखें)

वर्धमान महावीर खुला विश्वविद्यालय में
एम० ए० शिक्षा में उपाधि की
आंशिक संपूर्ति हेतु

लघुशोध

एसवर्ष.....

मार्गदर्शक	शोधकर्ता
नाम.....	नाम.....
उपाधि.....	स्कालरनं.....
पद एवं पदस्थापन स्थान	क्षेत्रीय केन्द्र का नाम
.....	.....

शिक्षा विभाग
वर्धमान महावीर खुला विश्वविद्यालय
रावतभाटा रोड़, कोटा (राज.)
पिन कोड 324010

Certificate from The Researcher

Certificate

This is to that the topic which am submitting my dissertation entitled----------(Title of the topic)----------under the guidance of (name of the Supervisor, Designation, Name of the Department / Institution.) This is my Original work and to the best of my knowledge so far no study has been conducted on this Topic.

(Signature)

(Name of the research Scholar)

Date……

Place……

ISBN-13/978-81-8496-238-3